अभिव्यक्ति

शब्दों में बसा दिल का संसार

डॉ. कुमकुम पाँडेय

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Kumkum Pandey 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-661-8

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: January 2026

अनुक्रमणिका

(१) सीख	1
(२) महफिल	2
(३) ज्वालामुखी	3
(४) मां	4
(५) दर्दे दिल	5
(६) चंद लम्हे	6
(७) तन्हा	7
(८) ज़ुल्म	8
(९) नींद	9
(१०) तलाश	10
(११) हालात	11
(१२) हार	12
(१३) हमदर्द	13
(१४) अस्तित्व	14
(१५) सिर्फ तेरा	15
(१६) चाहत	16

(१७) वजूद 17

(१८) मायूस 18

(१९) सफर नया 19

(२०) शोर 20

(२१) चीख 21

(२२) जीना 22

(२३) भीड़ 23

(२४) लफ्ज़, 24

(२५) पछतावा 25

(२६) तोहफा 26

(२७) हालात 27

(२८) खास 28

(२९) भ्रम 29

(३०) अंदाज 30

(३१) बदला 31

(४०) रूह 32

(४१) मजबूरी 33

(४२) झलक 34

(४३) दवा 35

(४४) गुल 36

(४५) रवानी, 37

(४६) रोबोट 38

(४७) आदत 39

(४८) जहान 40

(४९) सैराब 41

(५०) साथ 42

(५१) श्रद्धांजलि 43

(५२) बग़ावत 44

(५३) जहर 45

(५४) ख्वाहिश, 46

(५५) पल 47

(५६) मरहम 48

(५७) रिश्ते 49

(५८) आदत 50

(५९) बिखरना 51

(६०) खामोशी 52

(६१) चाहत 53

(६२) पैगाम 54

(६३) लहर 55

(६४) रूह 56

(६५) जख्म 57

(६६) उदास 58

(६७) गली 59

(६८) नाराज 60

(६९) चिराग 61

(७०) कोरोना 62

(७१) दूरियां 63

(७२) जनाजा 64

(७३) कविता 65

(७४) छींटें 66

(७५) *पंख* 67

(७६) सजा 68

(७७) गुल 69

(७८) पिंजरा 70

(७९) शिव 71

(८०) अभिमन्यु 72

(८१) किताब 73

(८२) उजाला 74

(८३) अजनबी 75

(८४) स्वार्थ 76

(८५) तन्हाई 77

(८६) लेखनी 78

(८७) स्याही 79

(८८) कलयुगी सीता 80

(८९) आत्मदाह 81

(९०) बुजुर्ग 82

(९१) भूत और भविष्य 83

(१) सीख

आज मैं जा रहा हूं
तुम्हें कुछ सीखा रहा हूं,
जिसे मैं खेल समझता रहा
खत्म कर दिया उसने मेरे जीवन का खेल,
सांसों को चलने के लिए
कदमों का चलना है जरूरी
घर में बंद रहना हालत की है मजबूरी
सलामत रहे तो कल फिर मिलेंगे,
आज पर्दे में रहे तो कल का शहर देखेंगे,
अभी नहीं संभले तो कल पछताओगे,
हालात की आंधी में मेरी तरह टूट कर बिखर जाओगे,
इसीलिए दोस्तों दो गज की दूरी और मास्क है जरूरी।

(२) महफिल

महफिल को सलीके से सजाए हमने,
शाबाशी जाम पिलाने वाला ले गया,
या खुदा तेरी दुनिया का दस्तूर निराला है,
सुख के दिनों में वो मेरे साथ था,
दुख के समय वो मुझे तनहा कर गया।

(३) ज्वालामुखी

ना खुशी ना कोई गम ,
पर जिंदगी में है कुछ खालीपन,
ख्वाहिशें बेशुमार है और वक्त है कम,
तन्हा हूं पहुंचेंगे कैसे मंजिल पर हम,
धधकती हुई अंदर की ज्वालामुखी कब फूटेगी,
मिलेगा सुकून और कब चैन से सोएंगे हम।

(४) मां

किसी के गोद में बिलख बिलख कर रोने को जी चाहता है,
अपने आंसुओं से किसी के दामन को भिगोने को जी चाहता है,

मां कहां हो आप
तुमसे मिलकर खुद को भूलने को जी चाहता है,
सुकून का वह पल तुम्हारे सिवा कहां,
उस प्यार की छांव तुम्हारे सिवा कहां,
उस छांव में जिंदगी बसर करने को जी चाहता है।

(५) दर्दे दिल

उनसे क्या बयां करूं अपने दर्दे दिल का हाल,
जिन्हें मेरे होठों की मुस्कुराहट तो दिखती है पर,
मूवी दर्दे दिल का जख्म नहीं।

(६) चंद लम्हे

लौटा दो उन्हें खुशी का चंद लम्हा,,
जिन्होंने सारी उमर बिताए तुम्हारे लिए।

(७) तन्हा

थक गया हूं अकेले चलते चलते,
कहीं वो मिलते तो साथ हो लेते,
बहुत रो लिया तन्हा उदास रातों में,
कहीं वो मिलता तो कंधे पर सर रख कर रो लेते,
बोझ लगने लगी हैअब जिंदगी अपनी,
कहीं वो मिलता तो कुछ पल जिंदगी के खुशी खुशी जी लेते।

(८) ज़ुल्म

इतने ज़ुल्म कर कैसे कोई जी लेता,
मेरे जीने की वजह तुम ही थे जानो,
तुम भी मुझे तन्हा कर गए,
कैसे जी पाऊंगी तुम ही बतलाओ।

(९) नींद

आंखें नींद से भरी हुई है,
पर सो नहीं पाता हूं मैं,
बहने को बेकरार है मेरे अश्क,
पर रो नहीं पाता हूं मैं,
जख्म अपना नासूर बन कर रिसने लगे हैं,
पर उफ भी नहीं कर पाता हूं मैं।

(१०) तलाश

दुनिया की भीड़ में अपनी तलाश आसां कहां,
खुद को ही खो दिया है फिर खुद की तलाश मुमकिन कहां,
जिंदगी बीत जाएगी दूसरों की सुनते सुनते,
खुद की भी कभी सुन पाऊं ऐसा शायद मुमकिन कहां।

(११) हालात

किस्मत को तो नहीं बदल सकते,
हालात के अनुसार खुद को ही बदल लेते हैं।

(१२) हार

बार-बार लड़ कर हार जाता हूं मैं,
हर रोज टूटता हूं और हर रोज बिखर जाता हूं मैं,
लड़ने वाले को तो दर्द नहीं होता,
फिर मैं वैसा क्या वैसा ही रह जाता हूं

(१३) हमदर्द

गम तो बेशुमार है जिंदगी में,
पर कभी किसी को बताया नहीं,
बिन बोले जो दर्द मेरे समझ ले,
ऐसा कोई *हमदर्द* पाया ही नहीं।

(१४) अस्तित्व

जब खुद का अस्तित्व और स्वाभिमानता ताख पर आ जाए,
जुर्म किसी का और इल्जाम खुद पर आये,
नहीं
नहीं है इसका अब कोई हल,
बस अब खुद को तुमसे दूर ले जाएं।

(१५) सिर्फ तेरा

मैंने जो खोया है वह मेरा तो है पर किसी और का भी है,
तुमने जो खोया है वह सिर्फ तेरा है तेरा है तेरा है

(१६) चाहत

मिले नहीं तुम जब चाहत थी तुम्हारी,
अभी लौट के भी आ जाओ तो जरूरत नहीं तुम्हारी।

(१७) वजूद

आप समझ गए हैं वजूद अपना,
किसी के लिए खुद को मिटाना नहीं है,
बहुत परेशां कर लिया खुद को तेरे लिए,
उस गलती को फिर अब दोहराना नहीं है,
जिन्हें जो समझना है समझ ले अपनी बला से,
लौट के तेरी जिंदगी में आना नहीं है।

(१८) मायूस

मेरी मायूसी से वह ना हो जाए मायूस,
अब लौट के उनके शहर आना जाना नहीं।

(१ ९) सफर नया

नए सफर में खामोशी को चुना है मैंने,
बिना जुर्म के बहुत कुछ सहा है मैंने।

(२०) शोर

शोर तो बहुत था अपनेपन का,
जरूरत पड़ी तो हर अपना बेनकाब हो गया।

(२१) चीख

चीख उठती है दर्द कभी चारदिवारी में,
होठों पर हंसी और दर्द की रूसवाई पर।

(२२) जीना

वो खुशी-खुशी जी रहें मेरे बगैर,
पर मुझे उनके बिना जीना नहीं आया।

(२३) भीड़

भीड़ मैं जाने पहचाने से दिखते हो,
तन्हा मैं ना जाने क्यों बेगाने से लगते हो,
मेरी सुनते नहीं अपनी कहते नहीं,
शायद किसी और के दीवाने लगते हो।

(२४) लफ्ज़,

लफ्ज़ होठों का आंखों को बयां करने दो,
गुफ्तगू भी होती रहे खामोशियां भी रहने दो

(२५) पछतावा

अच्छा अच्छा करके भी पछताना पड़ता है,
ख्वाबों को टूट कर बिखरन जाना पड़ता है,
सितम तो सहते आयें है तेरी,
पर हर सितम सह कर मुस्कुराना पड़ता है।

(२६) तोहफा

कभी तोहफा ना मिला जमाने से,
आज फूल पर फूल दिए जा रहे हैं।

(२७) हालात

तेरे जाने के बाद बिखर गया मेरा सब कुछ,
कैसे समेटूं और पहले जैसे हालात करूं।
नाराज है सारा जहां मुझसे
अब किससे दिल की बात करूं ,
छोड़ गए तन्हा अब सब, अब मैं खुद ही खुद के साथ रहूं।

(२८) खास

कई मौत मर चुका हूं किसी से क्या कहूं,
कितना जी लिया है खुद को भी न कह सकूं
छोड़े हैं कितने रास्ते तुमसे क्या कहूं,
वो लोग मेरे जो मेरे खास हैं उनसे कुछ ना कह सकूं।

(२९) भ्रम

मुझसे बच बच के रहने का उनका भ्रम टूट कर बिखर जाये,
गुजरे जिस रास्ते से और मेरा सामना हो जाये।

(३०) अंदाज

हंस कर सबसे दिल की बात करते रहे,
कौन अपना है और कौन पराया है नहीं समझा,
उनकी इस अंदाज पर तो हम मर मिटे,
कब होंगे खफा और कब आएगा प्यार नहीं समझा।

(३१) बदला

बदला न लिया खुद को बदल दिया,
इस पर न हो खुश हो तो मेरी क्या खता।

(४०) रूह

जिस्म तो सलामत है पर रूह को किसी ने मार दिया,
बात बात पर ताने देकर जीना बेहाल किया

(४१) मजबूरी

जिनकी साथ है मेरी सारी खुशी,
उनके बिन रहना है मेरी मजबूरी।

(४२) झलक

जिनकी झलक में करार बहुत है,
उनका दीदार दुश्वार बहुत है।

(४३) दवा

दवा की जरूरत नहीं हर पल सुकुन के लिए,
पास बैठो कुछ वक्त मेरी खुशी के लिए।

(४४) गुल

किस के लिए लाये हो गुल और गुलदस्ते,
हम अरमानों की दुनिया को कह चुके नमस्ते।

(४५) रवानी,

बरसों बाद जो दीदार हुआ उनसे मेरा,
मेरे ठहरे हुए जीवन में रवानी आ गई।

(४६) रोबोट

रोबोट का युग है रोबोट है हम,
रिमोट किसी के हाथ में ◌ामोश हैं हम।

(४७) आदत

हर ख्वाहिश किसी की कहां पूरी होती है,
जरा सा ही सही जिंदगी सब की अधूरी रहती है।

(४८) जहान

एक ही वो तो नहीं सारे जहान में,
फिर क्यूं नहीं मेरे दिल से वो उतर पाता।

(४९) सैराब

हरिण बयां नहीं कर सकता सैराब में मिले दर्द को अक्सर,
मेरा भी वही हाल है तेरे वादे पर यकी कर के मुसलसल।

(५०) साथ

साथ तो निभाया तुमने पर दर्द से मेरे दूर रहे,
अपनी बात मनवा वाली मुझसे
दर्द से मेरे नावाकिफ रहे।

(५१) श्रद्धांजलि

जीते जी ने पूछा हाल मेरा
मरने पर श्रद्धांजलि क्यूं,
जीते जी तो मार दिया था तुमने,
करने पर यह नाटक क्यों।

(५२) बग़ावत

बगावत पर उत्तर आते तो ऐसा ना होता,
हम हम ना होते और तुम तुम ना होते,
रिश्तो को बचाने के लिए कुछ सहना भी है पड़ता,
बरना हर रिश्ता टूटा ही होता

(५३) जहर

सोचा भी ना था कभी जिंदगी में,
तेरे बिन जिंदगी का जहर होता पीना,
तेरे साथ बिताए वह हसीन लम्हे,
भूल सकता नहीं पर बुलाना पड़ेगा,
वजूद ही नहीं था तेरे बिन जिंदगी में,
इस सच को झूठ समझना पड़ेगा,
इंतजार की अब इंतहा हो गई है,
मार मार के खुद को जीना पड़ेगा।

(५४) ख्वाहिश

ख्वाहिशें तुमको दिल की सुनाते रहे,
तुम सुन ही नहीं मैं बेजुबां हो गया,
राहें और भी थी पर मैं करता भी क्या,
रस्मों रिवाजों के हाथों फना हो गया,
सोचो अगर मैं बद्ज़ुबां हो गया,
शोखियों की अस्मत तुम्हारी बचती भी क्या।

(५५) पल

पता नहीं तेरी जिंदगी का कौन सा पल मेरे लिए है,
पर मेरी जिंदगी का हर एक लम्हा तुम्हारे लिए है।

(५६) मरहम

जिंदगी में कुछ जख्म ऐसे भी हैं,
जिनका मरहम वक्त के पास भी नहीं होता।

(५७) रिश्ते

कुछ रिश्ते हैं इसलिए चुप हैं
चुप है इसीलिए कुछ रिश्ते हैं।

(५८) आदत

आदत बदल सी गई है अब वक्त काटने की,
अभी हिम्मत त ही नहीं रही किसी से अपना दर्द बांटने की।

(५९) बिखरना

उन रिश्तों के दिल से उतर गए हम,
जिन्हें समेटने में खुद ही बिखर गए हम।

(६०) खामोशी

खामोशी एक जख्म बन जाती है,
जब बहुत कुछ कहना और सुनना हो तब।

(६१) चाहत

कितना बेबस है वह इंसान,
जिसकी चाहत ही है उसकी खुशी,
उसके बिना जीने की है मजबूरी।

(६२) पैगाम

अब शिकवा नहीं कोई तुम्हारे पैगाम न आने से,
जब खुद को ही खुद की खबर नहीं तो क्या शिकवा करूं जमाने से।

(६३) लहर

वक्त के लहरों से जब टकराई मेरी कश्ती,
यकीं मानिए खुद के सिवा खुदा का ही सहारा था

(६४) रूह

रूह तक रुला दिया उसने,
जिसे मेरी आंखों का भींगना भी नागवार था।

(६५) जख्म

अक्सर भूल जाती हूं मैं अपने जख्म गहरे को,
नहीं भूल पाती हूं मैं ज़ख्म देने वाले चेहरे को।

(६६) उदास

उदास मैं ना रहूं मेरे बस की बात नहीं,
मेरा मुस्कुराना मेरी किस्मत को मंजूर नहीं।

(६७) गली

जिस गली में न जाने की कसम खाई थी,
कुछ गली में अपना ठिकाना बना रहा हूं।

(६८) नाराज

नाराज नहीं होते अब किसी से हम,
हंस कर उठ जाते हैं तेरी महफिल से हम।

(६९) चिराग

कैसे करूं घर को रौशन,
चिराग जिंदगी का दूर है,
घर तो हो भी जाए रौशन,
पर दिल बहुत मजबूर है।

(७०) कोरोना

मरने से पहले वो कितना तड़पा होगा,
अपनों के रहते अपनेपन के लिए तरसा होगा,
अपनों को देखने के लिए कितनी तरसी होगी आंखें उसकी,
कोरोना से मरने वाले शख्स को अलविदा न कोई कहने वाला होगा,
न राम सत्य ना ना कोई चार कंधा,
पी पी ई किट में सजा उसका जनाजा होगा,
दूर खड़े सब अपने घर वाले,
एंबुलेंस में उसका अंतिम यात्रा होगा।

(७१) दूरियां

लोगों से दूरियां तो बना ली मैंने,
पर खुद से दूरी जाऊं मैं कैसे।

(७२) जनाजा

जनाजे पर मेरे प्रिय तुम न आना,

आना अगर तो ना आंसू बहाना जनाजे......।

बहुत प्यार करते थे तुमको सनम,
नहीं चाहते थे कभी तुमको रुलाना

जनाजे......।

गिरते रहे लड़खड़ाते रहे,

दोगे सहारा शायद मुझे। सहारा दिया ना संभाल मुझे,

जनाजे को मेरे न तुम मेरे कांधा लगाना.......।

रोते रहे बिलखते रहे , तुम्हें देखने को तरसते रहे।
समय ही नहीं था तुमको हमारे लिए

जनाजे पर मेरे आकर तुम अपना समय ना गवाना....।

रूखी सूखी रोटी के लिए भी तरसते रहे,
रोटी ना दी तो क्या दवा दोगे मुझे

जनाजे पर तुम मेरे नाम ब्राह्मण जिमाना.....।

(७३) कविता

कविता तभी लिख पाती हूं,
जब बहुत विकल हो जाती हूं।

पेट की आग जब बुझ नहीं पाती,
इस आग को बुझाती हूं कविता तभी लिख पाती हूं।

फटे अध्नगे कपड़े को देखकर,

लिखता है जब कोई सौंदर्य रस की कविता,
ढकने का असफल प्रयास करती हूं
कविता तभी लिख पाती हूं।

जय हो मेरे दरिद्रता और विवशता ,
जब बेचैन हो जाती हूं इससे कविता तभी लिख पाती हूं।

सावन की रिमझिम फुहारों से झोपड़ी में खुद को भीगने से बचाती हूं,
जब कविता तभी लिख पाती हूं।

(७४) छींटें

बाजी जब हाथ से छूटने लगी तो

किसी के दामन पर छींटे उड़ानें लगे,

चीखने से सच्चाई बदलती नहीं ,
खुद की नजरों में खुद को गिराने लगे।

(७५) *पंख*

क्यां कहूं कैसे कहूं मेरी बुद्धि मंद है,

कहने को बहुत कुछ है पर पंक्तियां कुछ चंद है,

उड़ने को आकुल है मन नील गगन की छांव में,

कैसे उड़ू, कैसे उड़ुं

उड़ना जिसे सिखाया उसने कतर

दिये मेरे पंख हैं।

(७६) सजा

बिन खता काट रहे हैं सजा,
कैसे यकीं दिलाऊं कि बेकुसूर हूं।
जी तो रहा हूं मैं खुशी खुशी,
पर जिंदगी से बहुत दूर हूं।
ठहाके लगा कर हंस रहा हूं,
पर खुशी से बहुत दूर हूं।

(७७) गुल

किस के लिए लाये हो गुल और गुलदस्ते,
हम अरमानों की दुनिया को कह चुके नमस्ते।

(७८) पिंजरा

पिंजरे में ही खुश थी,परकटी चिड़िया,
क्यों दिखाई तुमने बाहर की दुनिया ।
कहां और किधर जाए उसे क्या मालूम
बिना पर के कहां छटपटाएगी मुनिया।
हौसला दिया कि संभालोगे तुम ,
कटी पर को मरहम लगाओगे तुम,
उड़ गए तुम ही कहां जायेगी मुनिया।
पिंजरे में ही जिंदगी बिताएगी मुनिया।

(७९) शिव

दर्द छिपाता है वो अपना सबसे ,

वो शिव है शायद,
बिष पचाना भी उसे आता है।

भूला नहीं पाया उसे अब तक
शायद जादू टोना भी उसे आता है।

जी रहा है अपनो को ,खो कर
उसे सब सहेजना भी आता है।

अपना ही दर्द देता है उसे

उसे गैरों को हमदर्द बनना
भी आता है।

(८०) अभिमन्यु

आने वाले न आओ तो बेहतर है इस संसार में,

बढ रही है जनसंख्या इस कदर बाजार में,
धक्के ही धक्के मिलेंगे कल इस मुए संसार में।
आने वाले ना आओ तो बेहतर है इस संसार में।

खेतों में सर ढकने को मकां बन रहे हैं,
पेट की ज्वाला बुझाना मुश्किल है इस चारागाह में।
आने वाले नाम तो बेहतर है इस संसार में।

आदमी आदमी को लूटने में लगा है,
तुम भी पलोगे इस आतंक के बाजार
में।

काश अभिमन्यु के जैसे गर्भ में ही ले पाते अमन और शांति की शिक्षा,
और फैला पाते इस की लौ आतंकी संसार में।
आने वाले ना आओ तो बेहतर है इस संसार में।

(८१) किताब

एक रात इक अहसास लिखेंगे,
कह ना पाये जो कभी बात वो बात लिखेंगे,
वैसे मुझे तूझसे बहुत शिकायत है ए मेरी जिंदगी,
अब हम खुद के बारे में (एक किताब) खुद की ही हर बात लिखेंगे।

(८२) उजाला

क्या है अगर दुनिया में उजाला है ,
अपनी जिंदगी में तो गमों का अंधेरा है,
लोग लगाते होंगे कहकहे अपनी कहकहों में तो दर्द का बसेरा है,
मिलता होगा जहां में प्यार सबों को,
तिरस्कार और नफ़रत पर ही सिर्फ हक मेरा है,
फैशन में लोग पहनते हैं अधनंगे कपड़े,
अभाव में बदन मेरा यहां अधनंगा है,
कुत्ते भी खाते होंगे कहीं मीट और भात,
बची खुची से ही तो जीवन चलता मेरा है।

(८३) अजनबी

मेरा घर मेरे अपने अजनबी से लगते हैं,
मेरा अपना शहर भी मुझे अजीब सा लगता है,
यह फिजा यह नजारे यह अधखिली कलियां,
इनमें बहुत नूर हो शायद पर ये भी मुझे बेनूर सा लगता है,
इन्हें देख कर लोग खुश होते होंगे सारे,
तेरे बगैर मुझे यह अमावस की रात दिखता है।

(८४) स्वार्थ

स्वार्थ की इस गली में तेरा गुजरा है नहीं,
तेरे पास और कोई दूसरा चारा भी है नहीं,
हर शख्स एक दूसरे को लूटने में लगा है,
तुम लूट चुके हो तुम्हारे पास बचा कुछ भी नहीं,
लूटने दो अपना ईमान स्वाभिमान सब कुछ,
और कोई दूसरा जीने सहारा है भी नहीं,
शरीर तो हो ही चुका है घायल आत्मा को भी जख्मी होने दो,
दर्दे जिगर ही बचेगी तुम्हारी अमानत और कुछ भी नहीं,
हंसना तो भूल ही चुके हो रोना भी छोड़ दो
इसके सी बात तुम्हारे पास दूसरा कोई चारा भी नहीं,
होना चाहते ईमान और और पाना चाहते हो अपना स्वाभिमान,
डट कट करो मुकाबला दूसरा कोई रास्ता भी नहीं।

(८५) तन्हाई

तन्हाई का यह आलम और ऐसे में तुम्हारी याद आती तो है
पर याद आती है उसके साथ तुम्हारी बेवफाई भी,
निर्निमेष करने वाला रुप और भोलेपन की याद आती तो है,
पर याद आती है उसके साथ तुम्हारा
छलावा भी,
उफ्फ ये तुम्हारी नजरें और कातिल अदाओं की याद आती तो है,
पर याद आती है तुम्हारा कत्ल करना भी

(८६) लेखनी

लिखने को व्याकुल है मन मेरा,
पर लाएं कहां से लेखनी,
अपने जिंदगी की अस्त व्यवस्तता को सुलझाने में लगी है लेखनी,
दरिद्रता में उलझे जीवन को,
अमीर बनना चाहती है लेखनी,
जिंदगी में प्रेम रस के अभावों को,
स्याही के बिना पाट ना सकी लेखनी,
कैसे दूर होगा आभावों का ये सिलसिला,
इसे बताने को भी विबश है मेरी लेखनी,
दुनिया के हर जख्म की दवा हमदर्द हमसफर है मेरी देखनी।

(८७) स्याही

तन्हाई इस तरह समय है मुझ में,
बड़ी महफिल में भी खुद को तन्हा समझती हूं मैं,
स्याही इस कदर भरी है जिंदगी में मेरी,
तपती धूप को भी अमावस समझती हूं मैं,
साहिल ने मेरी कश्ती को इतनी बार डुबोया है कि,
बेड पर भी खड़ी कश्ती की तरह डगमगाति हूं मैं,
क्या लगेगी की कश्ती मेरी किनारे में,
भंवर में फंसी हूं जैसे सोच कर
तिलमिलाती हूं मैं।

(८८) कलयुगी सीता

कल ही जब फड़का था वाम अंग मेरा, याद आई रामायण की वह चौपाई,
प्रभु प्रयान जाना वैदेही,
फरकी बाम अंग जनु कहि देहिं,
सोचा था तुम आओगे
दहेज रूपी रावण को मार कर,
तुम अपने साथ ले जाओगे,
पर ना तुम आये न कपि की सेना ,
तलाक पत्र के साथ आई अदालत का चेला।

[26/11, 9:17 pm] Kumkum Pandey: अपने
हर कोई यहां अपना ही तो है,
पर क्यों मुझसे बेरुखे से रहते हैं,
पाना चाहती हूं प्यार जिनसे,
क्यों वह ठोकर लगाकर खुश होते हैं,
अपनों को चोट पर चोट देकर,
क्यों वफाई की सबक देते हैं,
जब भी बैठी हूं जब कश्ती पर उनके,
क्यूं मुझे डुबोने की तमन्ना रखते हैं।

(८९) आत्मदाह

क्यों इच्छा होती है मरने की,
लोग कहते हैं आत्मदाह पाप है,
पर खुद को मृत्यु तुल्य कष्ट में रखकर जीना पुण्य है,
सुनते हैं अकाल मृत्यु में के बाद,
उस लोक में कष्ट झेलना पड़ता है,
पर इस लोक की यातना भरी जिंदगी झेलने वाले से अधिक
सुनते हैं उस लोक की आत्माएं भीषण कष्ट देता है,
क्या इस लोक के इंसान से अधिक,
जिनकी जड़ें तुम रोपते हो वही तुम्हारी जड़ें काटते हैं।

[26/11, 9:41 pm] Kumkum Pandey:

(९०) बुजुर्ग

बुजुर्ग भी इंसान है हम सबों की तरह,
उनकी भी कुछ ख्वाहिशें कुछ अरमान है तुम सबों की तरह,
उम्र के साथ क्या सपने भी मर जाते हैं,
ख्वाहिशें से भी मिट जाती है और रहते हैं जिंदा लाश की तरह,
वो भी हंसना और मुस्कुराना चाहते हैं,
अकेले में घुट घुट कर नहीं मर जाना चाहते हैं,
वो भी इंसान है हम सबों की तरह,
बुजुर्ग होंगे तो है हम भी जरूर,
क्यों भूल जाते हो अपने दिन हुजूर,
उन्हें भी दो मौका जीने का हम सबों की तरह।

(९१) भूत और भविष्य

भूत की चिंता मत करो प्यारे ,
वर्तमान और भविष्य को संवारो,
मां-बाप तो वर्तमान है और भूत हो जाएंगे,
जीवन साथी तो आज है और कल भी रहेंगे,
मां बाप की असली संपत्ति तो आप हो,
पर अपना वर्तमान और भविष्य संवारने के लिए,
जीवनसाथी को खुश रखने के लिए तुम बाध्य हो।